रामदरश मिश्र के उपन्यासों में नारी-चेतना

❖ ❖ ❖

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत

पी-एच.डी. की उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रूप-रेखा

प्रस्तावनाः

मेरे शोध का आधार रामदरश मिश्र जी का उपन्यास साहित्य है। अपने साहित्य की बहुविधाओं के माध्यम से इन्होंने अपने ग्रामीण जीवन की संस्कृति से नाता जोड़ने का सफल प्रयत्न किया है। मिश्र जी के उपन्यास नायिका प्रधान है। उनके नायिकाएँ संघर्ष केंद्रित हैं । वे समाज के रीति, रिवाज के विरुद्ध संघर्ष के साथ साथ खुद अपने आपसे, अपने ठोस परिवेश से भी जूझती हैं । निरंतर टकराहट या साहचर्य में वे बनती और टूटती, टूटती और बनती रहती हैं । वे अपने व्यक्तित्व के प्रति पूर्ण सजग हैं। मिश्र जी के उपन्यासों में अनेक प्रसंग जैसे दहेज, विधवा विवाह, अनमेल-विवाह, बहु-विवाह आदि मिल जाते हैं जहाँ नारियों को चेता बनकर समाज के इस गले-सड़े ढाँचे का विरोध कर विद्यमान रुढ़ियों, परंपराओं तथा कुरीतियों का डटकर सामना करते हुए चित्रित किया गया है। रामदरश मिश्र जी की यह अभिव्यक्ति, शैली, नारी पात्रों का संघर्ष एवं चेतना मुझे हमेशा प्रभावित करते रहे हैं। इसीलिए विद्यावाचस्पति (पी-एच.डी.) उपाधि हेतु जब विषय चयन का प्रश्न मेरे सन्मुख

उपस्थित हुआ तब मैंने 'रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों में नारी-चेतना' इस विषय पर शोधकार्य करने का निश्चय किया।

प्रस्तुत शोध-कार्य की आवश्यकता तथा महत्वः

बहुमुखी प्रतिभा के धनी रामदरश मिश्र जी ने अनेक विधाओं में जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, यात्रावृत्त, संस्मरण, आत्मकथा, आलोचना, बालसाहित्य आदि में सार्थक और प्रभावशाली लेखन किया है। उनका उपन्यास साहित्य हिंदी साहित्य धारा में बेजोड़ है। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण कर उनकी पारिवारिक, सांस्कृतिक और सामाजिक समस्याओं का हल नारी-चेतना में खोजने की कोशिश की है। उनके द्वारा आलेखित नारी पात्र महज कल्पना मात्र न होकर यथार्थ की उस भाव भूमि पर खड़े हैं जहाँ उनके अपने सपने हैं, इच्छाएँ हैं, आक्रोश और संघर्ष भी हैं।

मिश्र जी के उपन्यासों में नारी का वह रूप भी चित्रित किया गया है जहाँ वह स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं अस्तित्व की स्थापना करने के लिए संघर्षशील हैं । प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा मिश्र जी के उपन्यासों में अंगीभूत नारी-चेतना को उजागर करने का मेरा प्रामाणिक प्रयत्न है। नारी-चेतना के इस युग में प्रस्तुत शोध कार्य सर्वथा मौलिक ही होगा।

शोध-विश्लेषण-पद्धतिः

प्रस्तुत साहित्यिक शोध कार्य विवेचनात्मक एवं समाजवादी दृष्टि से किया गया है। रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों में प्रतिपादित नारी चरित्रों का पारिवारिक सम्बन्ध एवं सामाजिक स्थिति के आधार पर वर्गीकरण करके उनका विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

मिश्र जी के उपन्यासों के नारी पात्रों का स्वरुप एवं विकास का अध्ययन कर, वे किस परिस्थिति में संघर्ष कर दूसरी नारियों के समक्ष नारी चेतना का आदर्श निर्माण करती हैं, इसका विवेचनात्मक पद्धति से अध्ययन करने का मेरा प्रयत्न रहा है।

प्रथम अध्याय
रामदरश मिश्रः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय के अंतर्गत रामदरश मिश्र जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अल्प परिचय दिया गया है। उनके विराट एवं कर्मठ जीवन को संक्षेप में प्रस्तुत करके उनके व्यक्तित्व के अलग-अलग पहलुओं को उनकी रचनाओं के माध्यम से उजागर करने का मेरा प्रयत्न रहा है। कृतित्व में उनके कविता, कहानी, निबंध, यात्रावृत्त, संस्मरण, आलोचना इन साहित्य कृतियों का आकलन भी किया गया है।

❖ ❖ ❖

द्वितीय अध्याय

साहित्य में नारी-चित्रण की परम्परा

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत साहित्य में नारी-चित्रण की परम्परा को उजागर किया गया है। भारतीय जीवन-पद्धति में नारी का स्थान और उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालकर नारी के विविध रूपों का सोदाहरण विवेचन किया गया है।

❖ ❖ ❖

तृतीय अध्याय

रामदरश मिश्र के उपन्यासों का परिचय, विशेषताएँ एवं पात्र-वर्गीकरण

इस अध्याय में मिश्र जी के कुल बारह उपन्यासों का सामान्य परिचय दिया गया है। उपन्यासों की विशेषताओं पर प्रकाश डालकर उनमें प्रतिपादित विविध वर्ग के पात्रों का सामान्य परिचय दिया गया है।

❖ ❖ ❖

चतुर्थ अध्याय

नारी-चेतना : संकल्पना, स्वरूप और विविध आयाम

इस अध्याय के अंतर्गत नारी-चेतना की संकल्पना और विविध आयामों का विवेचन किया गया है। नारी-चेतना के ऐतिहासिक परिपेक्ष्य को उजागर करते हुए भारतीय जीवन-

पद्धति में नारी का स्थान, पराधीनता, उत्पीड़न, विरोध और मुक्ति की कामना- इन तत्वों पर प्रकाश डालते हुए किन परिस्थितियों में नारी-चेतना मजबूत बनी है, इसके विविध पहलुओं के साथ विवेचन किया गया है।

❖ ❖ ❖

पंचम् अध्याय

वर्गीकरण के आधारपर नारी-पात्रों का विश्लेषण

इस अध्याय के अंतर्गत मिश्र जी के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों का पारिवारिक संबंध एवं सामाजिक स्थिति की दृष्टि से विश्लेषण करके उपन्यासों के उदाहरण के माध्यम से विविध पहलुओं का विवेचन किया गया है।

❖ ❖ ❖

षष्ठम् अध्याय

मिश्र जी के उपन्यासों में प्रतिपादित नारी-समस्याएँ, विद्रोह एवं संघर्ष

इस षष्ठम् अध्याय में रामदरश मिश्र के उपन्यास साहित्य में नारी पात्रों की समस्याओं को निरूपित कर उनके सशक्त और प्रभावशाली रूपों को उजागर किया गया है। इस अध्याय में सामाजिक रूढियों और मान्यताओं के नाम पर नारियों का होने वाला शोषण केन्द्रस्थ रहा हैं। तो साथ में दूसरी ओर उपन्यासकार ने शोषित नारी को मुक्ति दिलाने के भी प्रयास किए हैं। तत्संबंधी संकेत यहाँ दिए गये हैं।

❖ ❖ ❖

उपसंहार

इसके अंतर्गत 'रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों में नारी-चेतना' के संबंधी शोध-प्रबंध के सभी अध्यायों का निष्कर्ष एवं मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। शोध-प्रबंध के अंत में परिशिष्ट के अंतर्गत शोध-प्रबंध में प्रयुक्त सर्जनात्मक, आलोचनात्मक पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं आदि की सूची प्रस्तुत की गई है।

❖ ❖ ❖

कृतज्ञता ज्ञापन

सर्वप्रथम मैं मेरे मार्गदर्शक श्रद्धेय डॉ. उत्तमभाई पटेल (अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्टस एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर) की मैं सर्वाधिक ऋणी हूँ। इस शोध-कार्य को पूर्ण करने में मुझे उनसे सदैव प्रेरणा, मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं स्नेह प्राप्त हुआ है।

अपनी इस सारस्वत साधना में मैं आदरणीय कपिल देव शुक्ल (वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत), श्रद्धेय कीसन जी सोसा- (गुजराती दलित साहित्य के प्रसिद्ध कवि), प्रा. प्रेमजी परमार (विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, निफाड महाविद्यालय, नाशिक) के प्रति हार्दिक आभारी हूँ। इन महानुभावों के आशिर्वाद एवं सहयोग से मैं यह कार्य सम्पन्न कर सकी हूँ। मैं माननीय श्याम कामथे (विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पिंपळगाव महाविद्यालय, नाशिक) के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ क्योंकि शोध-कार्य की प्रेरणा मुझे उन्हीं से मिली है।

धरमपुर महाविद्यालय के माननीय प्राचार्य श्री. योगेशकुमार भट्ट तथा कार्यालय एवं ग्रंथालय के कर्मचारियों से भी मुझे अपार सहयोग प्राप्त हुआ है। इन सभी की मैं ऋणी हूँ।

मैं प्रा. श्रीमती पूनम बोरसे (विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, हरसुल महाविद्यालय, नाशिक) के प्रति विशेष आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे अमूल्य सुझाव दिए और प्रूफ सम्बन्धी त्रुटियों के निराकरण में मुझे सहयोग प्रदान किया।

अंत में इस शोध कार्य को पूर्ण करने में मुझे जिनसे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मार्गदर्शन एवं सहायता मिली है उन सभी नामी-अनामी गुरुजनों एवं मित्रो के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

धरमपुर

दि. ०९ /०५/२०१२

(गीता एम. रावतका) (डॉ. उत्तमभाई पटेल)

शोधार्थी निर्देशक

अध्याय १

रामदरश मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तावना-

१. रामदरश मिश्र व्यक्तित्व

१.१ जन्म

१.२ माता, पिता एवं परिवार

१.३ बचपन

१.४ गाँव के प्रति लगाव

१.५ शिक्षा-दीक्षा

१.६ विवाह

१.७ आजीविका

१.७.१ अध्यापन कार्य

१.८ उपाधियाँ एवं सम्मान

१.८.१ अकादमिक एवं साहित्यिक पद

१.८.२ अन्य पद

१.८.३ साहित्यिक उपलब्धियाँ

१.८.४ पुरस्कार एवं सम्मान

१.८.५ पुरस्कृत कृतियाँ

१.९ मित्र-परिवार

१.१० विद्यार्थी गण

१.११ प्रभाव, प्रेरणा एवं श्रद्धास्थानः

१.११.१ मदनेश जी और आचार्य शुक्ल जी

१.११.२ गुरुजन

१.११.३ कवि, लेखक, आलोचक

१.१२ व्यक्तित्व की विशेषताएँ

१.१२.१ सरलता

१.१२.२ कवि सम्मेलन-गोष्ठियों के प्रति विशेष रूची

१.१२.३ खान-पान, रहन सहन

१.१२.४ सहिष्णुता

१.१२.५ असाधारण व्यक्तित्व

१.१२.६ किसी वाद, धारा, प्रवाह, दल, पार्टी, शिबिर और खेमा विरहित साहित्यकार मिश्र जी

१.१२.७ संकोची स्वभाव

१.१२.८ भावुक व्यक्तित्व

१.१२.९ सहज सादगी

१.१२.१० अकृत्रिम और आत्मीयता पूर्ण व्यवहार

१.१२.११ संवेदनशीलता

१.१२.१२ प्रसन्नचित्त और आत्मसंतोषी

१.१२.१३ वसंत व्यक्तित्व के धनी

१.१२.१४ कालजयी रचनाकार मिश्र जी

१.१३ जीवनधर्मी लेखक मिश्र जी

१.१४ मानव में इश्वर का साक्षात्कार करनेवाला महामानव मिश्र जी

१.१५ ग्रामीणता की झलक

१.१६ बहुआयामी प्रेरणास्त्रोत रचनाकार

२. रामदरश मिश्र जी का कृतित्व

२.१ काव्य

२.२ उपन्यास

२.३ कहानियाँ

२.४ समीक्षात्मक कृतियाँ

२.५ ललित निबंध संग्रह

२.६ यात्रा-वृत

२.७ आत्मकथा

२.८ संस्मरण

२.९ प्रकीर्ण

निष्कर्ष

अध्याय २

साहित्य में नारी-चित्रण की परंपरा

प्रस्तावना-

१. वैदिक कालः पार्श्वभूमि

२. उत्तर वैदिक काल

३. स्मृति काल

४. मध्यकाल

५. आधुनिक काल

६. नारी के विविध रूपः

६.१ देवी रूपा नारी

६.२ मातृ रूपा नारी

६.३ पत्नी रूपा नारी

६.४ कन्या रूपा नारी

निष्कर्ष

अध्याय ३

रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों का सामान्य परिचय

प्रस्तावना-

१) उपन्यासों का परिचयः

१.१ 'पानी के प्राचीर'

१.२ 'जल टूटता हुआ'

१.३ 'सूखता हुआ तालाब'

१.४ 'अपने लोग'

१.५ 'रात का सफर'

१.६ 'आकाश की छत'

१.७ 'आदिम राग' (बीच का समय)

१.८ 'बिना दरवाजे का मकान'

१.९ 'दूसरा घर'

१.१० 'थकी हुई सुबह'

१.११ 'बीस बरस'

१.१२ 'परिवार'

२) पात्र-विश्वः

२.१ उच्च वर्ग

२.२ मध्य वर्ग

२.३ निम्न वर्ग

३) शोषण का स्वरुपः

३.१ आर्थिक शोषण का शिकार वर्ग

३.२ पारिवारिक शोषण का शिकार वर्ग

३.३ सामाजिक शोषण का शिकार वर्ग

३.४ धार्मिक एवं अंधश्रद्धा का शिकार वर्ग

३.५ राजनीतिक शोषण का शिकार वर्ग

३.६ औद्योगिकरण का प्रभाव

३.७ परम्परा और आधुनिकता के बीच अन्तर्विरोध और मूल्य-विघटन की त्रासदी

४) संघर्ष का स्वर

निष्कर्ष

अध्याय ४

नारी-चेतना संकल्पना स्वरूप और विविध आयाम

प्रस्तावना-

१. नारी-चेतना संकल्पना

२. नारी-चेतना विविध आयाम

३. नारी : परिभाषा, स्वरुप एवं विकास

४. भारतीय जीवन-पद्धति में नारी का स्थान

५. पुरुषप्रधान संस्कृति में नारी की पराधीनता

६. नारी अंतर्गत उत्पीड़न

७. परंपरा का विरोध

८. पुरुष-प्रधान संस्कृति से मुक्ति की कामना

९. नारी-मुक्ति आंदोलन प्रभाव

१०. नारी परक शैक्षिक आंदोलन

११. नारी परक रूढि एवं परंपराओं का निर्मूलन

१२. शिक्षा के कारण अस्तित्व बोध की चेतना

१३. प्रेम-विषयक नया दृष्टिकोण

१४. स्त्री-पुरुष समानता का विचार

निष्कर्ष

अध्याय ५

वर्गीकरण के आधार पर नारी-पात्रों का विश्लेषण

प्रस्तावना-

१. पारिवारिक संबंधों की दृष्टि से नारी-पात्र

१.१ माँ रूप में चित्रित नारी

१.२ सौतेली माँ के रूप में चित्रित नारी

१.३ पुत्री रूप में चित्रित नारी

१.४ बहन रूप में चित्रित नारी

१.५ पत्नी रूप में चित्रित नारी

१.६ ननद रूप में चित्रित नारी

१.७ भाभी रूप में चित्रित नारी

१.८ जेठानी रूप में चित्रित नारी

१.९ देवरानी रूप में चित्रित नारी

१.१० सास रूप में चित्रित नारी

१.११ बहु रूप में चित्रित नारी

२. सामाजिक स्थिति की दृष्टि से नारी-पात्र

२.१ प्रेमिकाएँ

२.२ वेश्याएँ

२.३ सेविकाएँ

२.४ परित्यक्ता

२.५ समर्पिता नारी-पात्र

२.६ आधुनिक नारी-पात्र

२.७ शोषित नारी-पात्र

२.८ विद्रोही नारी-पात्र

निष्कर्ष

अध्याय ६

मिश्र जी के उपन्यासों में प्रतिपादित नारी-समस्याएँ, विद्रोह एवं संघर्ष

प्रस्तावना-

अ) नारी-समस्याएँ:

१. विवाह संबंधी समस्याएँ:

१.१ अनमेल विवाह

१.१.१ अधेड़ उम्र पति

१.१.२ कुरुपता

१.१.३ शिक्षा में अंतर

१.२ बाल-विवाह

१.३ अन्तरर्जातीय विवाह

१.४ विवाह-विच्छेद-समस्या

१.५ विधवा-विवाह-समस्या

१.६ बहु-विवाह

१.७ दहेज-समस्या

१.८ विवाहेत्तर आकर्षण

१.१० स्वभावगत भिन्नता से अतृप्त दाम्पत्य जीवन

२. मातृत्व संबंधी समस्याएँ:

२.१ संतानहीन नारी समस्या

२.२ अवैध मातृत्व

३. प्रेम, काम-यौन संबंधी समस्याएँ

३.१ वेश्यावृत्ति समस्या

३.२ यौन शोषण की समस्या

३.३ मानसिक कुण्ठा

३.४ काम, प्रेम और विवाह त्रिकोण

३.५ प्रेम में असफल नारी की समस्या

४. आर्थिक समस्याएँ

५. नारी शिक्षा समस्याएँ

६. अस्पृश्य नारी की समस्याएँ

७. परित्यक्ता नारी की समस्याएँ

ब) नारी-चेतना: विद्रोह एवं संघर्ष

निष्कर्ष

उपसंहार

❖ ❖ ❖

परिशिष्ट

संदर्भ-सूची

१. आधार ग्रंथ-

उपन्यास साहित्य-

१. 'पानी के प्राचीर' - डॉ. रामदरश मिश्र, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, प्रथम संस्करण-१९६१

२. 'जल टूटता हुआ' डॉ. रामदरश मिश्र, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, प्रथम संस्करण-१९६९

३. 'सूखता हुआ तालाब' डॉ. रामदरश मिश्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दारियागेज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९७२

४. 'अपने लोग' डॉ. रामदरश मिश्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९७६

५. 'रात का सफर' डॉ. रामदरश मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९७६

६. 'आकाश की छत', डॉ. रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९७९

७. 'आदिम राग' (बीच का समय) डॉ. रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली-१९८२

८. 'बिना दरवाजे का मकान' डॉ. रामदरश मिश्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९८४

९. 'दूसरा घर' डॉ. रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली-१९८६

१०.'थकी हुई सुबह' डॉ. रामदरश मिश्र, इंन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९९४

११.'बीस बरस' डॉ. रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९९६

१२.'परिवार' डॉ. रामदरश मिश्र, शान्ति पुस्तक मंन्दिर, दिल्ली, प्रथम संस्करण-२००६

१३.रामदरश मिश्र रचनावली-१४, खण्ड, नमन प्रकाशन, दिल्ली-२०००

कहानी साहित्य-

१. 'इकसठ कहानियाँ', डॉ. रामदरश मिश्र, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली-१९८४

२. 'अपने लिए', डॉ. रामदरश मिश्र, परमेश्वरी प्रकाशन, प्रीत विहार प्रकाशन, दिल्ली-१९८२

काव्य संग्रह-

१. 'बाजार को निकले है लोग', विकास पेपर बॉक्स, दिल्ली-१९८६

आत्मकथा-

१. 'सहचर है समय', किताब घर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९९१

२. 'फुरसत के दिन', इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-२०००

संस्मरण-

१. 'स्मृतियों के छंद', ललित निबंध संग्रह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९९५

२. 'कितने बजे है', प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-१९८२

सम्पादित कृतियाँ-

१. 'हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष', गिरनार प्रकाशन, मेहराजा (उत्तर गुजरात) प्रथम संस्करण-१९७०

२. सर्जनात्मक ग्रंथ

१. 'औरत होने की सजा', अरविंद जैन

२. 'लक्ष्मण रेखा', अरुणा सीतेश

३. आलोचनात्मक ग्रंथ

१. 'वैदिक साहित्य में नारी', प्रशान्त कुमार, वासुदेव प्रकाशन, नई दिल्ली

२. 'भारतीय नारी', स्वामी विवेकानन्द

३. 'श्रृंखला की कडियाँ', महादेवी वर्मा, भारतीय भंडार, प्रयाग

४. 'गुरुदत्त के उपन्यासों मे नारी पात्र', डॉ. भीमराव मानकरे, गरिमा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-२००७

५. 'श्री वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नायिका परिकल्पना', डॉ. पी. के. इन्दिराबाई, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-२००५

६. 'रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ, विविध आयाम', डॉ. सुब्राव जाधव, साहित्यसागर प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण-२००९

७. 'यशपाल के उपन्यासों में नारी-चेतना', डॉ. सुमन शर्मा, पैराडाइज पब्लिशर्स, जयपुर-२०११

८. 'महिला साहित्यकारों का नारी-चित्रण', डॉ. रतनकुमारी वर्मा, अध्ययन पब्लिशर्स ॲण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स, नयी दिल्ली-२००९

९. 'रामदरश मिश्र के उपन्यासों में नारी', डॉ. मनहर गोस्वामी, भारत पुस्तक भंडार, दिल्ली-२००५

१०. 'मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी', डॉ. रमा नवले, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-२००७

११. 'रामदरश मिश्र के उपन्यासों में गृह परिवार', डॉ. यशवंत गोस्वामी, नया साहित्य केंन्द्र, दिल्ली-२००५

१२. 'नारी शोषणः समस्याएँ एवं समाधान', डॉ. राजकुमार अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-२००३

१३. 'आधुनिक हिंदी साहित्य विविध आयाम', संपा. डॉ. वी. के. अब्दुल जलील, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-२०००

१४. 'हिन्दी व्यंग साहित्य में नारी', डॉ. शैलजा माहेश्वरी, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-१९९७

१५. 'प्रतिनिधि महिला कहानीकारों में चित्रित नारी', डॉ. मीना जोशी (लाठकर), शैलजा प्रकाशन, कानपुर-२००८

१६. 'तुलसी साहित्यकारों में नारी', डॉ. शारदा त्यागी, इशान प्रकाशन, मेरठ, प्रथम संस्करण-२००२

१७. 'देवशे ठाकुर के उपन्यासों में नारी', डॉ. माधवी बागी, विद्या प्रकाशन, कानपुर-२००१

१८. 'रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन', डॉ. वी. पी. चौहान, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर-२००४

१९. 'रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश', अनिल विश्वनाथ काले, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर-२००७

२०. 'भारतीय नारी : शोषण के बदलते आयाम', डॉ. मंजुलता छिल्लर, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली-२०१०

२१. 'हिन्दी मराठी नाटकों में नारी', डॉ. वसुधा जोशी, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-२००१

२२. 'स्त्री विकासाच्या पाउलखुणा', संपा. डॉ. स्वाती कर्वे, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे-२००३

२३. 'स्त्रीवादी सामाजिक विचार', विद्युत भागवत, डायमंड पब्लिकेशन्स, पुणे-२००८

२४. 'रामदरश मिश्रः रचना समय', वेदप्रकाश अमिताभ, भारत पुस्तक भण्डार, दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९९९

२५. 'महिला सशक्तिकरण', डॉ. अनुराधा पाण्डेय, इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर-२०१०

२६. 'महिला अधिकार और कानून', अविनाश माहेश्वरी, प्रिज्म बुक्स, जयपुर-२०११

२७. 'साठोत्तरी हिंदी महिला कथा-लेखन में आधुनिकता बोध', डॉ. सौ. मेहर दत्ता पाथरीकर, शैलजा प्रकाशन, कानपुर-२००७

२८. 'रचनाकार रामदरश मिश्र', संपा. तिवारी निलानंद, गुप्त ज्ञानचंद, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली-१९९०.

४. अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ (English Books)

1. Feminism Censorship and Other Essays, K. K. Sharma, Sarup and Sons, New Delhi-2003

2. Feminism and Literature - Anthology of research articles in Feminist Studies, Veena Das, Prestige Books, New Delhi-1995

3. Facets of Feminism in Indian English Fiction, C. D. Barche, Prestige Books, New Delhi-1995

५. पत्रिकाएँ

१. हिन्दी प्रचार वाणी, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिती की मासिक मुख-पत्रिका, मार्च-२०१२

२. स्त्री, अप्रेल-२०१०

३. वागर्थः अंक २२, जनवरी-१९९७

४. समीक्षा, अप्रेल-जून, १९८३

५. समीक्षा, जुलाई-सितम्बर, १९९६

६. सारिका, मार्च-२००२

७. संचेतना, समकालीन हिन्दी उपन्यास विशेषांक

८. यंग इंडिया : १०-४, १०-९, १९९०

९. हंस, जनवरी-२००१

१०. बयान, दलित अस्मिता विशेषांक, अप्रेल-२०१०

११. शताब्दी कथा विशेषांक, जनवरी-फरवरी, २०००

१२. हिन्दी अनुशीलन, जून-२००४

१३. आउट लुक, जनवरी-२०११

१४. आजकल, सितम्बर-१९८४

१५. वामा, मई-१९८५

६. शब्दकोश

१. भार्गव आदर्श हिन्दी शब्द कोश, भार्गव बुक डेपो, वाराणसी-१९९०

२. अमित स्टूडेन्ट हिन्दी शब्दकोष, स्टूडेन्ट बुक डेपो, दिल्ली-२००८

❖ ❖ ❖